

७७. शुभनृपतेराख्यानम्

प्रणम्य परमानन्दं श्रीजिनेन्द्रजगद्धितम्। शुभाख्यभूपतेर्विचित्रं चरित्रं विरतिप्रदम् ॥१॥
 मिथिलानगरे राजा शुभो राज्ञी मनोरमा। तयोर्देवरतिः पुत्रः संजातः सुगुणाकरः ॥२॥
 एकदा नगरे तत्र मुनीन्द्रो ज्ञानसंयुतः। नाम्ना देवगुरुधीमान्समायातः सुसंघभाक् ॥३॥
 तदा महीपतिः सोपि शुभो भव्यजनैः सह। नत्वा मुनिं जगत्पूज्यं धर्ममाकर्ण्य पृष्ठवान् ॥४॥
 अहो मुने क्व मे जन्म भविष्यति विचक्षण। तच्छ्रुत्वा स मुनिः प्राह सुधीर्देवगुरुः स्फुटम् ॥५॥
 निजवर्चो गृहे राजस्त्वं भविष्यसि पापतः। महाकृमिर्मुनीन्द्राणां मानसे न भयं क्वचित् ॥६॥
 नगर्याश्च प्रवेशे ते विट्प्रवेशो मुखे ध्रुवम्। छत्रभंगस्तथा विद्धि साभिज्ञानमिति स्फुटम् ॥७॥
 सप्तमे च दिने भूप विद्युत्पातेन ते क्षयः। भविष्यति भवेदत्र प्राणिनां पापतो न किम् ॥८॥
 पुरं प्रविशतश्चापि ततस्तस्य महीपतेः। रथाश्वचरणोद्घातान्मुखे गूथः प्रविष्टवान् ॥९॥
 महावायुप्रवेगेन छत्रभंगोभवत्तदा। दुष्टपापोदये जन्तोः किं किं न स्याद्विरूपकम् ॥१०॥

७७. शुभ राजा की कथा

संसार का हित करने वाले जिनेन्द्र भगवान् को प्रसन्नता पूर्वक नमस्कार कर शुभ नाम के राजा की कथा लिखी जाती है। मिथिला नगर के राजा शुभ की रानी मनोरमा के देवरति नाम का एक पुत्र था। देवरति गुणवान् और बुद्धिमान् था। किसी प्रकार का दोष या व्यसन उसे छू तक न गया था ॥१-२॥

एक दिन देवगुरु नाम के अवधिज्ञानी मुनिराज अपने संघ को साथ लिए मिथिला आए। शुभ राजा तब बहुत से भव्यजनों के साथ मुनि-पूजा के लिए गया। मुनिसंघ की सेवा-पूजा कर उसने धर्मोपदेश सुना। अन्त में उसने अपने भविष्य के सम्बन्ध का मुनिराज से प्रश्न किया-योगिराज, कृपाकर बतलाइए कि आगे मेरा जन्म कहाँ होगा? उत्तर में मुनिराज ने कहा-राजन् सुनिए-पाप कर्मों के उदय से तुम्हें आगे के जन्म में तुम्हारे ही पाखाने में एक बड़े कीड़े की देह प्राप्त होगी, शहर में घुसते समय तुम्हारे मुँह में विष्टा प्रवेश करेगा, तुम्हारा छत्रभंग होगा और आज के सातवें दिन बिजली गिरने से तुम्हारी मौत होगी। सच है-जीवों के पाप के उदय से सभी कुछ होता है। मुनिराज ने ये सब बातें राजा से बड़े निडर होकर कहीं और यह ठीक भी है कि योगियों के मन में किसी प्रकार का भय नहीं रहता। मुनि का शुभ के सम्बन्ध का भविष्य-कथन सच होने लगा। एक दिन बाहर से लौट कर जब वे शहर में घुसने लगे तब घोड़े के पाँवों की ठोकर से उड़े हुए थोड़े से विष्टा का अंश उनके मुँह में आ गिरा और यहाँ से वे थोड़े ही आगे बढ़ेंगे कि एक जोर की आँधी ने उनके छत्र को तोड़ डाला। सच है, पाप कर्मों के उदय से क्या नहीं होता। उन्होंने तब अपने पुत्र देवरति को बुलाकर कहा-बेटा, मेरे कोई ऐसा पापकर्म का उदय आया उससे मैं मरकर अपने पाखाने में पाँच रंग का कीड़ा होऊँगा, सो तुम उस समय मुझे मार डालना। इसलिए कि फिर मैं कोई अच्छी गति प्राप्त कर सकूँ। उक्त घटना को देखकर शुभ को यद्यपि यह एक तरह निश्चय-सा हो

सुतं प्राह ततो भूपः पुत्र वर्चोगृहेऽहकम्। पञ्चवर्णः कृमिः पापाद्-भविष्यामि तदा त्वया ॥११॥
 स हन्तव्य इति प्रोक्त्वा भीत्वा विद्युत्प्रपाततः। कारयित्वा महालोहमंजूषां तां प्रविश्य च ॥१२॥
 तस्थौ गंगाहृदे यावत्तावत्सप्तमवासरे। सा मंजूषा स्वपापेन मत्स्येनोच्छादिता द्रुतम् ॥१३॥
 तस्मिन्नेव क्षणे कष्टं विद्युत्पातेन स प्रभुः। मृत्वा वर्चोगृहे जातः कृमिजन्तुः स्वपापतः ॥१४॥
 स देवरतिपुत्रेण मार्यमाणोऽपि विट्चयम्। प्रणश्य गतवानित्थं भुङ्क्ते जन्तुः स्वकर्मकम् ॥१५॥
 तदा देवरतेर्वाक्याच्छ्रुत्वा तद्वृत्तकं जनाः। भीत्वा संसारचेष्टाया जिनधर्मे तरां रताः ॥१६॥
 सोपि देवरतिर्धीमान्महावैराग्यभावतः। विधाय संसृतेर्निन्दां मुनिर्जातो विचक्षणः ॥१७॥

गया था कि मुनिराज की कहीं बातें सच्ची हैं और वे अवश्य होंगी पर तब भी उनके मन में कुछ-कुछ सन्देह बना रहा और इसी कारण बिजली गिरने के भय से डरकर उन्होंने एक लोहे की बड़ी मजबूत सन्दूक मँगवाई और उसमें बैठकर गंगा के गहरे जल में उसे रख आने को नौकरों को आज्ञा की। इसलिए कि जल में बिजली का असर नहीं होता। उन्हें आशा थी कि मैं इस उपाय से रक्षा पा जाऊँगा। पर उनकी ये बे-समझी थी। कारण प्रत्यक्ष-ज्ञानियों की कोई बात कभी झूठी नहीं होती। जो हो, सातवाँ दिन आया। आकाश में बिजलियाँ चमकने लगीं। इसी समय भाग्य से एक बड़े मच्छ ने राजा की उस सन्दूक को एक ऐसा जोर का उथेला दिया कि सन्दूक जल के बाहर दो हाथ ऊँचे तक उछल आयी सन्दूक का बाहर होना था कि इतने में बड़े जोर से कड़क कर उस पर बिजली आ गिरी। खेद है कि उस बिजली के गिरने से राजा अपने यत्न में कामयाब न हुए और आखिर वे मौत के मुँह में पड़ ही गए। मरकर वह मुनिराज के कहे अनुसार पाखाने में कीड़ा हुए। पिता के कहे अनुसार जब देवरति ने जाकर देखा तो सचमुच एक पाँच रंग का कीड़ा उसे देख पड़ा और तब उसने उसे मार डालना चाहा। पर जैसे ही देवरति ने हाथ का हथियार उसके मारने को उठाया, वह कीड़ा उस विष्टा के ढेर में घुस गया। देवरति को इससे बड़ा अचम्भा हुआ। उसने जिन-जिन से इस घटना का हाल कहा, उन सब को संसार की इस भयंकर लीला को सुन बड़ा डर मालूम हुआ। उन्होंने तब संसार का बन्धन काट देने के लिए जैनधर्म का आश्रय लिया, कितनों ने सब माया-ममता तोड़ जिनदीक्षा ग्रहण की और कितनों ने अभ्यास बढ़ाने को पहले श्रावकों के व्रत ही लिए ॥३-१६॥

देवरति को इन घटना से बड़ा अचम्भा हो ही रहा था, सो एक दिन उसने ज्ञानी मुनिराज से इसका कारण पूछा-भगवन्! क्यों तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं विष्टा में कीड़ा होऊँगा सो मुझे तू मार डालना और जब मैं उस कीड़े को मारने जाता हूँ तब वह भीतर ही भीतर घुसने लगता है। मुनि ने उसके उत्तर में देवरति से कहा-भाई, जीव गति सुखी होता है फिर चाहे वे कितनी ही बुरी से बुरी जगह भी क्यों न पैदा हो। वह उसी में अपने को सुखी मानेगा, वहाँ से कभी मरना पसन्द न करेगा। यही कारण है कि जब तक तुम्हारे पिता जीते थे तब तक उन्हें मनुष्य जीवन से प्रेम था, उन्होंने न मरने के लिए यत्न भी किया, पर उन्हें सफलता न मिली और ऐसी उच्च मनुष्य गति से

सकलभुवनसारं दत्तसंसारपारं दुरितशतनिवारं यस्य वाक्यं सुतारम्।
स सृजतु जिनदेवो देवदेवेन्द्रवन्द्यो निजचरणसुसेवां मुक्तिपर्यन्तमुच्चैः ॥१८॥
इति कथाकोशे शुभनृपस्याख्यानं समाप्तम्।

७८. सुदृष्टेराख्यानम्

नत्वा जगत्त्रयाधीशैः पूजितं श्रीजिनेश्वरम्। वक्ष्ये सुदृष्टिसन्नामरत्नविज्ञानिवृत्तकम् ॥१॥
उज्जयिन्यां महाराजः प्रजापालः प्रजाहितः। श्रीमज्जिनेन्द्रपादाब्जसेवनैकमधुव्रतः ॥२॥
राज्ञी च सुप्रभा तस्य सती सद्रूपमण्डिता। तदेव भुवने भाति रूपं यच्छीलसंयुतम् ॥३॥
तत्रैव पत्तने जातो रत्नविज्ञानिको महान्। सुदृष्टिर्नामतस्तस्य भार्याभूद्विमला कुधीः ॥४॥

वे मरकर कीड़ा होंगे, सो भी विष्टा में। उसका उन्हें खेद था और इसलिए उन्होंने तुमसे उस अवस्था में मार डालने को कहा था। पर अब उन्हें वही जगह अत्यन्त प्यारी हैं, वे मरना पसन्द नहीं करते। इसलिए जब तुम उस कीड़ा को मारने जाते हो तब वह भीतर घुस जाता है। इसमें आश्चर्य और खेद करने की कोई बात नहीं। संसार की स्थिति ही ऐसी है। मुनिराज द्वारा यह मार्मिक उपदेश सुनकर देवरति को बड़ा वैराग्य हुआ। वह संसार छोड़कर, इसलिए कि उसमें सार कुछ नहीं है, मुनिपद स्वीकार कर आत्महित साधक योगी हो गया। जिनके वचन पापों के नाश करने वाले हैं, सर्वोत्तम हैं और संसार का भ्रमण मिटाने वाले हैं, वे देवों द्वारा, पूजे जाने वाले जिन भगवान् मुझे तब तक अपने चरणों को सेवा का अधिकार दें जब तक कि मैं कर्मों का नाश कर मुक्ति प्राप्त न कर लूँ ॥१७-१८॥

७८. सुदृष्टि सुनार की कथा

देवों, विद्याधरों, राजाओं और महाराजाओं द्वारा पूजा किए जाने वाले जिन भगवान् को नमस्कार कर सुदृष्टि नामक सुनार की, जो रत्नों के काम में बड़ा होशियार था, कथा लिखी जाती है ॥१॥

उज्जैन के राजा प्रजापाल बड़े प्रजाहितैषी, धर्मात्मा और भगवान् के सच्चे भक्त थे। उनकी रानी का नाम सुप्रभा था। सुप्रभा बड़ी सुन्दरी और सती थी। सच है—संसार में वही रूप और वही सौन्दर्य प्रशंसा के लायक होता है जो शील से भूषित हो ॥२-३॥

यहाँ एक सुदृष्टि नाम का सुनार रहता था। जवाहरात के काम में यह बड़ा चतुर था तथा सदाचारी और सरल-स्वभावी था। इसकी स्त्री का नाम विमला था, विमला दुराचारिणी थी। अपने घर में रहने वाले एक वक्र नाम के विद्यार्थी से, जिसे कि सुदृष्टि अपने खर्च से लिखाता-पढ़ाता था, विमला का अनुचित सम्बन्ध था। विमला अपने स्वामी से बहुत नाखुश थी। इसलिए उसने अपने प्रेमी वक्र को उसका कर, उसे कुछ भली-बुरी सुझाकर सुदृष्टि का खून करवा दिया। खून उस समय किया गया जब कि सुदृष्टि विषय-सेवन में मग्न था। सो यह मरकर विमला के ही गर्भ में